गुरु के वचन को किया पूरा

केलवा: 10 नवंबर

आचार्यश्री महाश्रमण ने तेरापंथ की उद्गम स्थली केलवा धरती पर चातुर्मास कर अपने गुरु आचार्यश्री महाप्रज्ञ को दिए वचन को पूरा किया है। आचार्यश्री महाप्रज्ञ 2008 में चातुर्मास करने वाले थे, पर स्वास्थ्य आदि कारणों से चातुर्मास नहीं हो सका। यह आचार्यश्री महाश्रमण की विशेष गुरु भक्ति है, समर्पण है। ऐसे महान गुणों को आत्मसात करने वाला ही महान गुरु बन सकता है।

अनेक कीर्तिमान स्थापित

जनसंपर्क प्रभारी मुनि जयंतकुमार ने बताया कि आचार्यश्री महाश्रमण ने केलवा चातुर्मास में अनेक कीर्तिमान स्थापित किए है। उन्होंने आचार्य भिक्षु की तपोभूमि में विदेश नेपाल में चातुर्मास करने की घोषणा की। यह 250 वर्षों के इतिहास में किसी आचार्य द्वारा नहीं हुआ है। इसके साथ आचार्यश्री ने एक साथ 2017 तक के चातुर्मास एवं 2018 तक के मर्यादा महोत्सव की घोषणाएं की। यह भी एक कीर्तिमान है। इतनी घोषणाएं एक साथ किसी भी आचार्य द्वारा नहीं की हुई है। इस चातुर्मास में इतनी भीड रही, श्रद्धालुओं का रेलमपेल रहा। जैनों के अलावा अजैन परिवार भी भक्ति भावना से परिपूर्ण रहे। यह भी उल्लेखनीय प्रसंग है। केलवा के जैन अजैनों की इतनी श्रद्धा देखकर आचार्यश्री महाश्रमण स्वयं अभिभूत है। राष्ट्रीय–अन्तरराष्ट्रीय स्तर के अनेक कार्यक्रम हुए। देश विदेश के अनेक महानुभावों का आगमन हुआ। उनमें पूर्व राष्ट्रपति एपीजे अब्दुल कलाम, अन्ना हजारे, गुजरात के राज्यपाल, ताईवान के राजदूत, अनेकों मंत्री, सांसद, विधायक, राजनीतिक पार्टी अध्यक्ष प्रमुख थे।

नशामुक्त केलवा के स्वप्न में सफलता

आचार्यश्री महाश्रमण ने चातुर्मासिक प्रवेश पर केलवा को नशामुक्त बनाने की इच्छा जाहिर की थी और इसके लिए मुनि सुखलाल, मुनि अशोककुमार और मुनि जयंतकुमार को नियोजित किया। सभी ने स्थानीय चातुर्मास व्यवस्था समिति, अणुव्रत समिति, युवक परिषद्, किशोर मंडल एवं ग्रामीण लोगों के सहयोग से इस कार्य को गति दी। इसमें काफी हद तक सफलता भी मिली है।

आध्यात्मिक उत्थान

केलवा के इस चातुर्मास में श्रावकों का आध्यात्मिक उत्थान हुआ। संवत्सरी के दिन लगभग पांच हजार पौषध का होना इसका उदाहरण है। सैंकडों लोगों ने विभिन्न प्रकार की तपस्याएं की। 30 दिन तक केवल पानी पर रहना बहुत कठिन तपस्या है। ऐसी तपस्या करने वाले अनेक लोग थे। साधु–साध्वियों ने पंचरंगी तप, एकातंर तप आदि तपस्याएं की। हजारों श्रावकों ने सामयिक, उपवास, प्रवचन श्रवण आदि से आत्मा का उत्थान किया।

पहली बार छोटी उम्र के अध्यक्ष

केलवा चातुर्मास की एक यह भी विशेष बात थी कि यहां चातुर्मास व्यवस्था समिति के अध्यक्ष महेन्द्र कोठारी इतनी छोटी उम्र के थे। उनकी युवा और अनुभवी लोगों की टीम थी, जिससे प्रायः अच्छी व्यवस्था रही। सफल होने के लिए केलवा तेरापंथ समाज हकदार है। इस टीम के साथ राज परिवार सहित संपूर्ण ग्रामवासियों का सहयोग भी उल्लेखनीय रहा।